International Indexed & Referred Research Journal, April, 2012. ISSN- 0974-2832, RNI-RAJBIL 2009/29954; VoL. IV * ISSUE-39

शोध पत्र- हिन्दी

मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी समस्याएँ

* डॉ. विजय शिवराम पवार

* शंकरराव चव्हाण महाविद्यालय, अर्धापूर, नांदेड

April, 2012

जन्म से लेकर ही स्त्री–पुरुष में भेदभाव किया जाता है। बेटे के जन्म से माँ–बाप खुश हो जाते हैं वहीं बेटी के जन्म पर आमतौर पे शोक मनाया जाता है। वर्तमान में नारी कितनी भी पढ़ी लिखी क्यों न हो, उसे पुरुष के समान अधिकार प्राप्त नहीं होते। कहीं न कहीं इसमें जन्म देनेवाली माता भी दोषी दिखाई देती है। वह बेटी को बहुत सारे बंधनों में रखती है, लेकिन बेटे को पूर्ण रुप से छुट देती है। पुराने विचारोंवाली माताएँ तो बेटी को शिक्षा क्षेत्र से भी वंचित करती है। लड़की के विवाह के बारे में सोचती है, इसी समाज व्यवस्था का लाभ पुरुष उठाते हुए पत्नी पर रौब जमाना चाहता है। परंतु आज की शिक्षिता नारी स्वंय के अधिकार प्राप्ति के लिए लड़ती–झगड़ती है।

विवेच्य कहानियों के आधार पर अब नारी को समान अधिकार की समस्याओं से झगड़ना पड़ता है इसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत है।

'गीत का चुबंन' इस कहानी में समान अधिकार की बात बताई गई है। आज समाज में स्त्री–पुरुष समान अधिकार की बाते बहुत होती है पर व्यवहार मे कुछ भी नही होता। इस कहानी की पात्र कनिका निखिल से कहती है, ''बाते हम कितनी ही बडी–बडी बनालें निखिल दा! पर व्यवहारों मे आगे नही ' बढ पाते है। आप जो यहा बैठकर इतनी लंम्बी चौडी बाते बघार रहे है, मान लो, कल को आपकी बीबी आए और किसी दूसरे पुरुष के साथ वह आपना शारीरिक संम्बन्ध रखे तो बर्दास्त कर सकेंगे आप? यों ड्रॉइंग रुम मे बैठकर बाते बनाना बड़ा सरल होता है। पर वे बाते भर ही रहती है, कोरे सिध्दांत !''[1]

'त्रिशंकु ' कहानी के अंतर्गत भी स्त्री–पुरुष असमानता दिखाई देती है। इस कहानी में जो परिवार है वह आधुनिक विचारों को लेकर वार्तालाप करता है। पर जब स्त्री–पुरुष मैत्री की या समानता की बात घर मे घटित होती है तो सोच बदलती है। और वही अपने पुत्री को कहते है कि,

''तनु तो बड़ी फास्ट चल रही है।''[2] इसी सोच पर तनु कहती है कि, ''मम्मी का अपना सारा उत्साह मंद पड़ गया था। और लिंक से हटकर कुछ करने की थ्रिल पूरी तरह झड़ चुकी थी। अब तो उन्हे इस नंगी सच्चाई को झेलना था कि उनकी निहायत ही कच्ची और नाजुक उम्र की लड़की तीन–चार लड़कों के बीच घिरी रहती है। और मम्मी की स्थिति यह थी की वे न इस स्थिती को पूरी तरह स्वीकार कर पा रही थी और न अपने ही द्वारा बडे जोश में शुरु किए इस सिलसिले को नकार ही पा रही थी।''[3] इस प्रकार इस कहानी के अंतर्गत स्त्री–पुरुष असमानता का चित्र दिखाई देती है।'दरार भरने का दरार' की श्रुती भी पराधीन है। पर वह इस पराधीनता का विरोध करती है। वह कहती है कि, ''विभु यह सोचते हैं कि मैं अलग नहीं रह सकती। स्वभाव से मैं बहुत डिपेंडेंट हूँ , ठीक है कि हर आदमी किसी न किसी पर डिपेंड़ करता है, मैं भी करती हूँ। पर विभु पर नहीं। उन पर निर्भर करुँगी तो कितनी बड़ी किंमत माँगेगे वे, उतना सब देने का सामर्थ्य नहीं है, मुझमें''[4]

'नई नौकरी' इस कहानी की रमा भी अपने को कभी कभी पराधीन समझने लगती है। उस की नौकरी घर के कामकाज के कारण छोडना पड़ता। नौकरी छोडने के बाद जब वह पश्चाताप करने लगती है तो उसका पति कुन्दन उसे कहने लगती है, ''मेरा संतोष, तुम्हारा संतोष नहीं है, मेरी तरक्की तुम्हारी तरक्की नहीं है ?''[5]

'बंद दरवाजो का साथ' इस कहानी की मंजरी पति के विवाहपुर्व व्यक्तिगत रहस्यों के प्रकट होने पर दाम्पत जीवन में पड़नेवाली दरार से मंजरी अन्यत्र समझौता कर लेती है। पर दाम्पत्य जीवन में दूसरी बार स्वंय को अपने व्यक्तिगत रहस्यों के कारण किस प्रकार दूसरे पति से दुराव अनुभव करती है और जीवनयापन करने को मजबुर हो जाती है। वह सोचने लगती है और कहती है,'' विपिन ने केवल अपनी जिंदगी को ही टुकड़ो में नहीं कांटा, कितने कौशल्य से वह उसकी जिंदगी को ही टुकडों में कांट गया है कि आगे उसे सारी जिंदगी ही इन टुकड़ों की अभिशप्त छाया में कांटनी होगी कि वह अब कभी भी अपनी संपुर्ण जिन्दगी नही जी पाएगी''[6] इस प्रकार वह पारिवारिक समस्यांओं मे जकड़ चुकी है।

'दरार भराने की दरार' इस कहानी की नायिका 'श्रुति' पारिवारिक समस्याओं से ग्रस्त है। वह अपने पति 'विभु' से नाराज है। वह अपनी सहेली नन्दी से कहती है, ''झगड़ा क्या होगा नन्दी, हमारा कभी मेल ही नहीं था। भीतर से कुछ न होकर भी बाहर से निभाए जा रहे थे। पर अब लगने लगा है कि आखिर घर बनाए रखने की ही ऐसी कौनसी मजबुरी है ?''[7] इस प्रकार इनके परिवार में समस्याए दिखाई देती है।

विवेच्य कहानियों में नारी जीवन की विभिन्न समस्याएँ चित्रित हैं। पराधीनता के कारण नारी का स्वंतत्र विकास नहीं हो पाता। विकास के लिए उसे संघर्ष करना पड़ता है। किसी भी स्थान पर क्यों न हो नारी पराधीनता बनी हुई दिखाई देती है। उसे स्वाधीनता केवल नाममात्र के लिए दिया गया है। नारी को शादी के पहले माँ–बाप, शादी के बाद पति तो बुढ़ापे में बेटे

की इच्छा के अनुसार रहना पड़ता है। अतः पुरुष प्रधान सामाज व्यवस्था कारण ही आज नारी समस्याओं से ग्रस्त दिखाई देती है। नारी अपने अधिकारों की माँग भी नहीं कर सकती।

यदि वह समान अधिकारों की करती है तो उसे पति को खोना पड़ता है। परंतु विवेच्य कहानियों की नारी अधिकार के लिए लड़ती हुई दिखाई देती है। वह समय आने पर विद्राह के लिए तैयार दिखती है। नारी को परिवार में रहते हुए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आर्थिक अभाव के कारण कहीं कहीं नारी को स्वयं चरित्रहीन बनने के लिए मजबूर होना पड़ता है। दाम्पत्य जीवन भी पति की वैचारिक भिन्नता के कारण पत्नी को समस्याएँ झेलनी पड़ती हैं। साथ ही यौन समस्या से भी नारी ग्रस्त है। अतः स्पष्ट है कि कारण कौनसा भी हो नारी को समस्याओं का शिकार होना ही पडता है।

इन सभी समस्याओं को देखने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि, नारी अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अपने उद्देश्यपुर्ति के लिए सजग बनी दिखाई देती है। फिर कहीं पर वह हारी हुई दिखाई देती है, तो कहीं पर वह विद्रोही बनी दिखाई देती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. नायक खलनायक विदुषक – मन्नू भंडारी पृष्ठ–45
2. दस प्रतिनिधि कहानियाँ – मन्नू भंडारी पृष्ठ–112
3. वही – पृष्ठ–112
4. नायक खलनायक विदुषक – मन्नू भंडारी पृष्ठ–373
5. एक प्लेट सैलाब – मन्नू भंडारी पृष्ठ–17
6. एक प्लेट सैलाब – मन्नू भंडारी पृष्ठ–29
7. नायक खलनायक विदुषक – मन्नू भंडारी पृष्ठ–368